**कैसे कहू?**

कैसे कहू मै तुमसे?

क्या हुआ मेरे साथ

कोशिश तो बहुत की मैंने

मगर बचा ना पाई लाज

दरिंदे थे वो सारे

जिन्होंने किया मेरा ये हाल

जीतना तो चाहती थी मई मौत से

मगर ज़िन्दगी से गई हार

दुनिया छोड़ चुकी हू मै

मगर आंशु अब भी नहीं थमते

यहाँ रह कर भी दर्द होता है दिल में

जब देखती हू माँ बाप को बिलब्ते

मेरे घर में तो कुछ नहीं बचा

सिवाए आंशु और अँधेरी रातों के

मगर आप अपने घरों को बचा लो

इन् दुष्टो की कलि करतूत और जाती से

वादा करो मुझसे आप

ना छोड़ोगे ऐसे हैवानों को

क्यूंकि आज मै चढ़ी हू बलि

कल को मुरझा सकती है आपकी कलि

**किशोर पाठक**